चण्डीगढ़ भास्कर 23.1.14

एक और डॉक्टर ने वीआरएस लेकर पीजीआई छोड़ा

ऑर्थो स्पेशलिस्ट डॉ. रमेश कुमार सेन ने ली रिटायरमेंट, दो प्राइवेट हॉस्पिटल्स से मिला ऑफर, 7 साल में 12 सीनियर डॉक्टर छोड़ चुके हैं पीजीआई

भास्कर न्यूज | चंडीगढ़

समय से पहले रिटायरमेंट लेकर पीजीआई छोड़ने वाली स्पेशलाइज्ड फैकल्टी की लिस्ट में एक और नाम जुड़ गया है। पीजीआई में ऑर्थो स्पेशलिस्ट डॉ. रमेश कुमार सेन ने वॉलंटरी रिटायरमेंट लेकर प्राइवेट हॉस्पिटल जाने की तैयारी कर ली है। उन्होंने करीब डेढ़ महीने पहले वॉलंटरी रिटायरमेंट के लिए एप्लाई किया था। बुधवार को उन्हें इसकी मंजूर मिल गई।

देश की सबसे लंबी और सफल सर्जरी और हिप ज्वाइंट में एवेस्कुलर नेक्रोसिस का स्टेम सेल थेरेपी से सफल ट्रीटमेंट करने जैसी उपलब्धियां डॉ. सेन के नाम हैं। पीजीआई छोड़ने के लिए एप्लाई करने के बाद ही डॉ. सेन के पास दो बड़े प्राइवेट हॉस्पिटल्स से ऑफर आ चुके हैं। 20 साल से ज्यादा समय तक पीजीआई को सेवाएं देने के बाद संभवतः डॉ. सेन ट्राईसिटी में ही प्राइवेट हॉस्पिटल ज्वाइन करने वाले हैं।

कई कारणों से छोड़ते हैं

पीजीआई: डॉ. ग्रोवर- पीजीआई के कार्डियोलॉजी डिपार्टमेंट से वॉलंटरी रिटायरमेंट लेने वाले और ममता मेडिकल कॉलेज कन्नम (आंध्र प्रदेश) के डिपार्टमेंट ऑफ कार्डियोलॉजी के हेड प्रो. अनिल ग्रोवर बताते हैं कि प्रमोशन समय पर न होना और डिपार्टमेंट के अंदर भी हेडशिप जैसी जिम्मेदारियां नहीं मिलने से डॉक्टर सर्विस छोड़ना बेहतर समझते हैं। प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों को सिर्फ और सिर्फ एमडी जैसे नए कोर्स शुरू करने को सीनियर डॉक्टर्स की सर्विस की जरूरत रहती है। वॉलंटरी रिटायर होने वाले डॉक्टर मेडिकल कॉलेज प्रेफर करते हैं।

क्यों जा रही है स्पेशलाइज्ड फैकल्टी

पिछले 7 साल में 12 डॉक्टर समय से पहले या फिर रिटायरमेंट के बाद पीजीआई छोड़कर प्राइवेट हॉस्पिटल ज्वाइन कर चुके हैं। डिपार्टमेंट में डॉक्टरों को समय पर प्रमोशन नहीं मिलने से वित्तीय लाभ और सीनियोरिटी प्रभावित हो रही है। कार्डियोलॉजिस्ट व पीजीआई के पूर्व डायरेक्टर प्रो. केके तलवार के कार्यकाल के दौरान कार्डियोलॉजी डिपार्टमेंट से दो सीनियर फैकल्टी डॉ. एचके बाली और डॉ. अनिल ग्रोवर ने पीजीआई छोड़कर प्राइवेट हॉस्पिटल ज्वाइन किए थे। इन दोनों ही डॉक्टरों की पीजीआई में 10 साल से ज्यादा सर्विस बची थी। ऐसे ही कई दूसरे डॉक्टरों ने भी पीजीआई छोड़कर प्राइवेट हॉस्पिटल ज्वाइन किए।

मिलता है तीन गुना ज्यादा पैकेज

पीजीआई में रिटायरमेंट के करीब डॉक्टरों की सैलरी डेढ़ से दो लाख है। जबकि प्राइवेट हॉस्पिटल में नए डॉक्टर को ही डेढ़ लाख सैलरी दे रहे हैं। पीजीआई छोड़कर जाने वाली स्पेशलाइस्ड फैकल्टी को 7 से 8 लाख और रिटायरमेंट के बाद प्राइवेट हॉस्पिटल इन डॉक्टरों को 4 से 5 लाख महीने की प्रोफेशनल फीस दे रहे हैं।

बेहतर पेशेंट केयर को नुकसान

पीजीआई के ऑर्थोपेडिक्स डिपार्टमेंट के प्रो. रमेश सेन ने हिप ज्वाइंट की कई बीमारियों के लिए दुनिया को कई नई सर्जिकल तकनीक दी। डॉ. सेन ने चार साल पहले हिप ज्वाइंट में आई प्रॉब्लम की सबसे लंबी और कामयाब सर्जरी की। हिप ज्वाइंट प्रॉब्लम को दूर करने के लिए डॉ. सेन ने अपनी सर्विस के दौरान कई एडवांस तकनीक दीं। दुनिया के कई देशों के ऑर्थोपेडिक सर्जंस ने डॉ. सेन द्वारा डेवलप की गई 40 सर्जिकल तकनीक को अपनाया। जर्मनी और अमेरिका के कई हॉस्पिटल में डॉ. सेन विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे। घुटनों और हिप ज्वाइंट रिप्लेसमेंट के अलावा ट्यूमर की प्रॉब्लम को दूर करने में भी डॉ. सेन की स्पेशलाइजेशन है।

20 साल की सर्विस के बाद रिटायरमेंट

पीजीआई से रिटायर होने वाले सीनियर डॉक्टरों को 20 साल की सर्विस के बाद पूरे बेनीफिट मिलते हैं। पीजीआई डॉक्टर्स 60 साल की सर्विस के बाद रिटायर होकर अगर किसी गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज जॉइन करते हैं तो ही पेंशन रुकती है। मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया से डॉक्टरों को 65 साल तक प्रैक्टिस या टीचिंग की इजाजत है।

इन डॉक्टरों ने ज्वाइन किए प्राइवेट हॉस्पिटल

कुछ वर्षों में डॉ. पी. कुल्हाड़ा, डॉ. जेडी विज, डॉ. आरजे दाश, डॉ. वीके खोसला, डॉ. एसके शर्मा, भूषण कुमार, डॉ. पीएच चारी, डॉ. सरला मलहोत्रा, डॉ. एनएम गुप्ता, डॉ. जसवंत राय, डॉ. लता कुमार, डॉ. एसएम बोस, डॉ. वीके कॉक और अब डॉ. विनय सखूजा ने प्राइवेट हॉस्पिटल ज्वाइन किया है। डॉ. एसके सिंह, डॉ. आर. मुरलीधर, डॉ. एचके बाली, डॉ. जगमोहन, डॉ. अनिल ग्रोवर ने भी पीजीआई छोड़कर प्राइवेट हॉस्पिटल ज्वाइन किए।